# ईशावास्योपनिषत्

पद पदार्थ तथा गुजराति टीका सीधि

प्रसिद्ध करनार

स्वामी कृष्णाश्रम.

राणसि मध्ये असिसंगम दक्षिणामूर्तिमठ.

सनगरस्थ.


ावण शुदि १ बुध. संवत १९६७

प्रथमावृत्तिः प्रत २००

अमदावाद खाडीआमां हितेच्छु प्रेसमां

शा. कालीदास घेहेलाभाइए छाप्युं.

मागणी उपरथी सन्यासीने वगर मूले मळशे.

मूल्य ०–४–०.

# ईशावास्योपनिषत्.

पद पदार्थ तथा गुजराति टीका साथे

प्रसिद्ध करनार

स्वामी कृष्णाश्रम.

वाराणासि मध्ये असिसंगम दक्षिणामूर्तिमठ.

विसनगरस्थ.

श्रावण शुदि १ बुध.     संवत १९६७

प्रथमावृति: प्रत २००

अमदावाद खाडीआमां हितेच्छु प्रेसमां

शा. काळीदास घेहेलाभाइए छाप्युं.

मागणी उपरथी सन्यासीने वगर मूले मळशे.

मूल ०-४-०.

# अर्पण पत्रिका.

## परमहंस परिव्राजकाचार्य स्वामि माधवाश्रम.

थोडा वरसपर हुं संसारनां सुखमां लपटाइ रह्यो हतो; पाश्चिमात्य विद्याना प्रभावथी, तथा देशान्तर निवासि जनोना मत्तना परिचयथी, मूर्तिपूज तथा पौराणिक आचरण उपरथी दीर्घकाळथी मने अनास्था थइ हती; पारमार्थिक विषयनुं ज्ञान मने गुजराति भाषा मार्फते यत्किंचित थयुं हतुं, पण अध्यात्मक पुस्तको वांचीने समजवा पुरतो, अथवा सत् समागम पुरतो मने वखत मळ्यो नहतो; तोपण सुभाग्ये थोडां वरसथी आपनो समागम कर-

थांनी मने जोगवाइ मळी के तरतज आ दुर्लभ अने दुर्घट विषयनुं ज्ञान त्वरित रीते वधतुं जतुं मारा समजवामां आव्युं अने परिणामे, आ संसार मने बेस्वाद नीवडयो हतो, तेथी मुक्त थवाने हुं शक्तिवान थयो; अने आ पुस्तक प्रथम पुष्पदळ नीवडयुं ते मात्र आपना समागमना प्रतापथीज. माटे आपनुं कल्याणकारी साधनभूत नाम, आपे सुचवेला अने अनुग्रहित आ पुष्पदळ रुप पुस्तकमां दाखल करवानी अनुमति आपशो, तेथी वारंवार आप कृपाळुनुं पवित्र स्मरण थवाथी हुं कृतार्थ थइश.

ली. सेवक.

स्वामी कृष्णाश्रम.

# उपोद्घात.

साम्प्रतकाळे पृथ्वी उपर वसनारी सर्व प्रजाओनां पुस्तकोमां वेदनां पुस्तक सर्वथी जूनां छे, ए वात निर्विवाद स्थापित तथा मान्य छे. तेनी अंदर विविध स्थळे वसनारा अनेक ऋषिओए भिन्न भिन्न प्रसंगे उच्चारेला विचार समाएला छे. आ विचारोनो परिणामी हेतु मनुष्य जातनी उन्नति प्रत्ये प्रेराएलो होवा छतां, देश-काळ-वस्तु परिच्छिन्नत्वने लीधे जन्म पामती भेदबुद्धिने ते हेतु भेदभावि भासे छे. अने तेने लीधे प्रजामां अनेक पंथो प्रचालित थइने कुसंप, तथा तज्जनित अनेक अनिष्ट परिणामोनां बीज रोपाय छे.

जे भेदबुद्धिने लीधे उपर जणावेलुं अनिष्ट

परिणाम नीपजे छे, तेनी निवृत्ति अथवा निरोध करवानुं पावरधुं साधन मात्र वेदान्त शास्त्र छे. तेना सिद्धान्तो कोइ पण अन्य पंथनो निरादर करता नथी; पण सिद्धान्तोमां समाएलुं सत्य वेद मंत्रोमां रोपाएलुं छे, एम साबीत करी आपीने, ते सिद्धान्तो सर्व पंथोने सुसंप दिशामां प्रेरणा करे छे.

घणा प्राचिन काळथी चालतो आवेलो वेदान्त मत उक्त कारणोथी अव्यवास्थित थइ गयो हतो; तेनी श्री शंकराचार्यए पुनस्थापना करी, तेथी तेमने **षट्दर्शनस्थापनाचार्यनी** पदवी प्राप्त थइ.

आ वातने हाल दीर्घकाळ व्यतित थयो; ते दरमीयान प्रजानी बुद्धि वळी विकार पामी. दीर्घका-

ळनी पंथाध्यासित बुद्धि, अगर जो वेदान्तना अथवा अभेदभावना प्रकाशथी दोराइने तेमनुं अवलंबन करे छे खरी; तथापि अति सुदृढ थइ गएली ते अध्यासित भेद बुद्धि, जे लोकेषणानो त्याग करवामां आव्यो होय, ते इषणानाज अवलंबनने लीधे, जे इन्द्रियवृत्तिनो निरोध फरमाववामां आवे छे, तेनुं उद्बोधन करीने, अने जे अहंभावना निवारणनो अंगिकार करवामां आवे छे, तेने उछेरवाथी, ते भेद बुद्धि उलटी स्फूरणा पामे छे. ते एटले सुधी के सारासारबुद्धिने दबावी दइने वेदान्तानुं अवलंबन अने प्रतिपादन करवामां अग्रेसर मनाता अने पोताने गणावता पुरुषोज एक बीजाथी जुदा पडता नजरे पडे छे; तो पछी अन्य पंथीओ पोतानी जातनी, पोताना वंशजोनी, अने

पोताना अनुयायिओनी मोटाइ तथा इन्द्रिय सुखनी वृद्धिने माटे धर्मनी समजणमां भेदभावनो भेग करी पोताना पंथने छेकज जुदुं रुप आपे; वेदान्त दर्शननी झांखी करतां पण पोताना अज्ञान आश्रितोने रोकी राखे; अने अन्य अनेक रीते तेनी उपेक्षा करे, एमां नवाइ शी? छतां पण शास्त्रानुसार खुलासा करवानी आवश्यकता प्राप्त थाय छे; के तरतज पोताना पक्षनी पुष्टिने माटे पण वेदान्त मतना सिद्धान्तोनो आश्रय लेवानी जरुर पडे छे. आम वेदान्तमतनी प्राचीनता तथा निर्विकृति अडग रहेली छे; तो तेनी उत्पत्ति तथा व्यवस्थानुं दिग्दर्शन करवु जोइए.

जळना प्रवाह सेंकडो वरसपर जेवी वस्तुस्थीतिमां वहन करता हता, अने प्राणने आधार

आपता हता; तेवीज रीते आ काळे पण वस्तु-स्थीतिना संजोगानुसार ते वहन करे छे; तथा प्राणने आधार आपे छे. वायु पण वस्तुस्थित्यानुकूळ वहन करतो, तेज रीते साम्प्रतकाळे पण वस्तुस्थित्यानुकूळ प्रवाह करे छे, तथा प्राणने आधार आपे छे. एक चकली सेंकडो वरसपर जेवी रीते पोतानां बाळकने सेवती, माळा बांधती, अने चारो चरती, तेवीज रीते वर्तमान काळे पण ते ते कर्मो ते करे जाय छे. तेम कइ मुदतथी ते ते तत्वो तथा जीवो ते प्रमाणे करवा प्रवृत्त थयां, ते मनुष्यना जाणवामां नथी. आवां आवां द्दष्टान्तो उपरथी आ संसार अनादि छे एम मानवामां आवे छ तेम बीजी तरफ वस्तुस्थीति बदलायाथी, पव-ननी तथा पाणीनी गतिमां अने तेनी असरमां

तफावत पडतो, चोकस मुदतोनी निरीक्षाओ वडे जोवामां आवे छे; केटलीक वनस्पतिने संस्कार आपीने तेना स्वभावमां भिन्नता उत्पन्न करतां आवडे छे; अने तेथी जगतने प्रथमना करतां उन्नत स्थीतिए अवलोकवामां आव्युं. आवा प्रकारनां दृष्टान्तो आपीने जगतने साद्यंत तथा उन्नतिने पात्र मानवामां आव्युं. आथी जडवाद अने चैतन्यवाद एवा बे वाद उत्पन्न थया. जडवादीओ जड पदार्थोनां साधनोवडे भक्ति करवा लाग्या; त्यारे चैतन्यवादीओ उपासनाना योगे भक्ति करवा लाग्या. अगर जो आ बेउ वादमां अंशतः सत्य रहेलुं छे खरुं, परंतु संपूर्ण सत्य तो ते पैकी एकेमां नथी. खरुं छे के जड पदार्थना रुपान्तरे करीने जड तत्वनी चेष्टा दृष्टिगोचर थाय छे; अथवा अनुमा-

नादिक प्रमाणोवडे सिद्ध थाय छे. तोपण ते चेष्टा करवाने जड तत्व स्वतः छेकज असमर्थ छे. वराळयंत्रनां अंगो, जड पदार्थनां बनेलां होय छे, ते जे महाभारत काम करे छे, ते जो वराळनुं उद्बोधन तेमने मळे नहीं, तो तेमनाथी ते कांइ पण थइ शके नहीं. तेवीज रीते जड पदार्थनुं बनेलुं शरीर चैतन्यना उद्बोधन वगर शब–स्थीतिमां पडयुं रहे छे अने तेमां जो विकार प्राप्त थाय छे, तो ते चैतन्यना उद्बोधन वडेज प्राप्त थाय छे. माटे एकलुं जड तत्व तथा तेनी चेष्टा एज जगतनुं कारण छे, एम मानीशकाय नहीं. तेमज चैतन्य तत्व पण पोतानी मेळे अभिव्यक्त थवाने असमर्थ छे. जड तत्वनी चेष्टानुं उद्बोधन करवाने ते समर्थ छे, एवुं ज्ञान पण जड तत्वनी चेष्टा

उपरथीज अनुमानादिक प्रमाण तथा वस्तुस्थीतिनी निरीक्षाथी सिद्ध थाय छे. माटे चैतन्य एकलुं स्वतः जगतनी उत्पत्तिनु कारण छे, एम सिद्ध थतुं नथी.

आ उपरथी समजवामां आवशे के जड तत्वना रुपान्तरनी पात्रता तथा चैतन्य तत्वनुं उद्‌बोधन ए बेनो योग एज जगतना आविर्भावनुं अने उत्पत्तिनुं कारण छे. अने चैतन्यनं उद्‌बोधन कार्य अथवा जडना धर्मोनुं यथार्थ ज्ञान जेथी मळी आवे तेनेज ब्रह्मविद्या अथवा ब्रह्मज्ञान कहेवामां आवे छे.

वस्तुस्थीति तथा तेना विविध प्रकारना संबंध जाणवा ए सामान्य ज्ञान छे. (आ पुस्तकमां "ज्ञान" शब्दवडे "विशेष ज्ञान" समजवानुं छे.) अने ए सामान्य ज्ञान विश्वमां व्यापि रहेलुं छे, तथापि

जन्म वखते बाळकनामां तेनो आविर्भाव थतो नथी. पण जेम जेम ते बाळक उछरतुं जाय छे, तेम तेम ते ज्ञानना आविर्भावनो महीमा वृद्धि पामतो जाय छे. तेवीज रीते समष्टि भावे पण ज्ञानना आविर्भावमां उत्तरोत्तर वृद्धि थती निरखवामां आवे छे. आ वातोनुं अवलंबन करतां, जगतनी स्थीतिनो नीयामक ज्ञानने गणवामां आव्युं. अने छेवटे कर्म, उपासना, अने ज्ञान ए त्रण ब्रह्मविद्याना प्रकार मानवामां आव्या; अने तेमां पण प्रथमना बे प्रकारनो त्रीजामां समावेश करवामां आवे छे. एम संपूर्ण प्रमाण युक्ति प्रयुक्तिथी सिद्ध करवामां आवे छे. अने ए शास्त्रने वेदान्त शास्त्र कहे छे.

ज्ञाननो आविर्भाव वृद्धिने पात्र छे, एम उपर

बतावबामां आव्युं छे; ते चोकस वस्तुस्थीति, अने संजोगोने लेइने वृद्धि पामी शके छे. चकलीना शरीरना अंगोनी रचना स्थीति अने संजोगो, एक झाडना शरीरमां होतां नथी; तेमज मनुष्य जातना अने मनुष्य मनुष्यनां शरीरोमां पण तेनी भिन्नातानां दर्शन अनन्त छे. अने तेथी ज्ञानना आविर्भावनां दर्शन पण अनन्त छे. आ दर्शन उपरथीज, अने ते दर्शननी उत्पत्ति तथा व्यापारना स्वभावनु अवलोकन कर्या वगर, जे मत्त बांधवामां आवे तेज जडवाद छे. अने ए जडवादनुं कार्यसाधकत्व समजवा माटे ब्रह्मविद्या अथवा वेदान्तशास्त्रमां जे सूत्रोवडे तत्वोना स्वभाव अने व्यापारनो निर्णय करवामां आवे छे, ते सूत्रोनुं अध्ययन करवुं जोइए. परंतु जडवादनी हयाति मात्र जाणीने कृतार्थ

थएला पुरुषोने एवा कोहेडा मळी आववाना के तेनो खुलासो करवाने तेओ छेकज असमर्थ नीवडे छे. तत्वरुपे जगत एज ब्रह्मभावे काळमाननी पूर्वे अखंड एक रस सर्वत्र व्याप्तमान छे तेम हतुं, तथापि तेना आविर्भावमां तेने साद्यंत गृहण करवामां आवे छे; एटले प्रवाह रुपे ते अनादि छे पण वस्तुस्थीति रुपे ते क्षणिक छे, एम उपर प्रतिपादन करवामां आव्युं छे. आ विवेचनने अनुसरतां, तथा तदनुसार जे शास्त्रो रचायां छे तेमना धारवा प्रमाणे ते सर्वव्यापि एकमांथी काळान्तरे जड अने चैतन्य एवां बे तत्वो जूदां पडवा लाग्यां; एटले ते ते तत्वोनी प्रकारनां प्रथक प्रथक लक्षणो भासवा लाग्यां. ए विकृति आगळ वधतां तेओ एवां भिन्न पडयां के चैतन्य तत्व पोताना मूळ स्वभावे सर्व-

व्याप्त अविच्छिन्न प्रसरी रह्युं; अने जड तत्वे अनेक नाम रूप गृहण कर्यां, तेना अध्ययनने माटे तथा मानुषि समजशक्तिनी परिमितिने अनुकूळ ते अध्ययन थइ पडे, एटला माटे तेनां जूदां जूदां नाम रूपोनी समजण पेदा थइ. आ समजण माटे प्रथम १ अविद्याशबळब्रह्म, २ अव्यक्त, ३ महत्, ४ अहंकार, ५ तन्मात्रा, ६ पंचमहाभूत, ७ जीव, ८ शरीर तथा तेना पेटानां (अ) कारण (आ) सूक्ष्म, (इ) स्थूळ शरीरो. तथा शरीरनां इन्द्रियो, कोशो, अन्तःकरण इत्यादिक अवयवो बंधाया तथा प्रतीति पाम्या.

उपर मुजब अनुक्रमे सृष्टिनी उत्पत्ति मानवामां भुस्तर विद्यादिक अर्वाचिन प्रत्यक्ष प्रमाणो पण अनुमति आपे छे. तेमां एक बाळकनी निरीक्षानु-

सार एवी पण कल्पना नीकळी शके छे के उत्पत्ति समये मनुष्यने स्पष्ट उच्चार करतां आवडतुं नहोतुं; अने समष्टिभावे उच्चार करतां प्रथम **अ–उ–म्** ए त्रण उच्चार, उत्पत्ति पछी केटलेक काळे प्रथम आवडया. आ काळे जे कांइ माणसना जोवामां अने जाणवामां आवतुं तेनो बोध थवा माटे ए त्रणज अक्षरोनो उपयोग थतो हतो. वळी ए त्रण अक्षरोनो सामटो बोध थवा माटे "ॐ" आ चिन्ह वापरवामां आव्युं. अने पछी काळान्तरे बाकीना स्वर तथा व्यंजनना अक्षरो निर्माण करवामां आवेला होवा जोइए. सामान्य रीते बधा स्वरो, अने विशेष रीते उपर बतावेला त्रण अक्षरोना उच्चार वाणी-स्थानना संबंध वगर हृदयनी पासेथी उत्पन्न थाय छे अने तेनो सघळा देशनी भाषाओमां उच्चार

थाय छे. माटे ते उच्चार समष्टि रूपे ब्रह्मभावने सिद्ध करे छे. अने ए उपरथीज प्रणवने ब्रह्मरूप मानवामां आवे छे.

पोताना विचार प्रगट करवानुं सामान्य अने मूळ साधन जे परा वाचा, ते तो प्राणी मात्रने प्राप्त छे. अने ते उक्त त्रण स्वरो तथा ते स्वर मिश्रित व्यंजनो मार्फत प्राणी मात्र पोतपोताना विचारने प्रकाश आपवा समर्थ छे. परंतु ते प्रकाश जोइए तेटलो स्पष्ट होतो नथी. स्पष्ट ज्ञानने माटे स्थानभेदानुसार उच्चारनी अपेक्षा रहे छे. अने उच्चारनी ते शक्ति मनुष्यनेज प्राप्त छे ए शक्ति, जेम जेम माणसनी संख्यामां अने देशकाळवच्छिन्नत्वमां वृद्धि थती गइ, तेम तेम ते विकास पामती गइ.

हाल जे भाषाओ वपराय छे, अथवा जाण-वामां आवी छे, तेओमां संस्कृत भाषा सर्वथी प्रथम रचाएली साबित थइ छे. तेथी ते भाषामां जे जे वातोनुं वर्णन करवामां आव्युं छे, ते पण प्रथम दर्शनीय, जूनी अने प्रथम प्राप्त थएली मानवामां आवे छे. अगरजो हाल पण आ संस्कृत भाषा वातचितमां विद्वानो वापरे छे, ते मार्फते शास्त्रीय विषयो लखे छे, अने वादविवाद चलावे छे; तेथी केटलेक प्रसंगे नवी वातो पण संस्कृत भाषाना लेखोमां मळी आवे छे, ए खरूं; तथापि लेखोनी भाषानी ढब, विचारोनुं अलौकिकपणुं, अने तेमनी संकळनानी छटा, वगेरे भाषानां उप-लक्षणोनी निरीक्षा करतां, जे वातो जूनी छे एम प्रसिद्ध थाय छे, ते वातो कोइ पण अन्य देशनां

जूनां पुस्तकोमांथी प्राप्त थती नथी. माटे जूनां पुस्तको संस्कृत भाषामां पहेलां रचायां एम मानवानुं कारण मळे छे.

मनुष्यसृष्टिना प्रारंभकाळे वयोवृद्धनुं एटलुं बधुं मान हतुं के ते जे कांइ कहे ते जाणवा लायक छे, एम तरुणो मानीने, तथा ते जाणवा लायकज नीवडतुं तेथी, तेवी कहेली वातो जाणवा लायक एम मानीने ते बधी वातोने वेद. ए नाम आप्युं.

वळी ते वखतनी प्रजा एटली बधी सत्यशीळ हती, के कोइ पण शखस सत्यथी विरुद्ध बोले छे, एवी कल्पना पण कोइने थती नहीं. तेथी जे कोइ वात ते काळे कोइ पण मार्गे सांभळवामां आवती ते वातनी उत्पात्तिनी शोध कर्या वगर, तथा ते वातनी कसोटी सरखी काढया वगर, ते खरी

छे एम गृहण करीने अथवा ते वात सांभळेली छे, एम कहीने ते मानी लेवामां आवती. तेथी ते वातोने श्रुति ए नाम प्राप्त थयुं.

आवी रीते श्रुति नामनी विद्या अथवा सांभळेली वातोनो समुदाय ए वेद अगर श्रुति रूपे स्थापित थया पछी ते संभारी राखवा माटे गोखी राखीने ते बधी वातो कंठाग्रे राखवामां आवती, ते वातो पण वेद नामथी ओळखवामां आवी. पछी काळान्तरे ज्यारे लखवानो हुन्नर प्राप्त थयो, त्यारे वर्णोच्चारानुसार सूचक चिन्हो ठरावीने ते ते अक्षर रुपे निर्माण थया. अने ते वातोए लेखनुं रुप धारण कर्युं.

उपर जणाव्युं ते रीते उत्पन्न थएली वेद विद्यानां तत्वो शरूवातमां ओतप्रोत एकठां थइ

रह्यां हतां. काळान्तरे जूदाजूदा रुषिओए भिन्न भिन्न धोरणे ते विद्यानुं विभागीकरण करीने भणवा भणाववानी तथा समजवानी सरळता माटे तेनी व्यवस्थाओ करी. तेमां मुख्य मंत्र भागनी अंदर प्रार्थना, आज्ञा, आशीर्वाद, कृतार्थतानां उद्गार इत्यादिक विशयोनो विविध रूपे समास करवामां आव्यो; आ मंत्रोनो उपयोग अने प्रयोग तथा तेना प्रसंगो सूचवनार विधानो जेमां दर्शाव्यां छे, ते भागनुं नाम ब्रह्मण पडयुं. ते उपरांत ते बन्ने प्रकारना विषयोनो केटलाक अरण्यवासी रूषिओए संग्रह कर्यो, तेनुं नाम आरण्यक पडयुं. अर्थात् मंत्र, ब्राह्मण, अने आरण्यक ए त्रणे ग्रंथोनो समास वेदमां थाय छे. ते उपरांत ज्योतिष, शिल्प, वैद्यक विद्या, धनुर्विद्या, इतिहासो, इत्यादिक सां-

सारिक विषयोनुं विवेचन पण ते ग्रंथोमां मळी आवे छे.

आ ग्रंथोना सदरहु भागोमां छूटक छूटक ब्रह्मविद्यानो पण समास करवामां आवेलो; ते चाळी काढीने जे लेखो स्थापित करवामां आव्या ते उपनिषद् नामथी ओळखाय छे; ते उपनिषदो पैकी आ एक टुंकामां अति बोधकारक उपनिषद छे.

आ उपनिषदनुं भाष्य श्रीमन् आचार्य महाराजे कर्युं छे तथा अनेक पंडीतोए तेनी टीकाओ पण करी छे. अने ते बधी परिच्छिन्न काळानुसार तथा प्रत्येक ग्रंथकारोनी समजण मुजब अर्थ प्रदर्शित करे छे. अने ते मुजब बोध मारा विद्वान महात्मा गुरूना अनुग्रहथी मने प्राप्त थयो; ते बोध मारी समजण जे, सांम्प्रतकाळना प्रवाहानुंरूप पाप्त

छे तेने अनुसरतो गृहण थइ शक्यो छे ए वात स्वभाविक छे. अने ते गृहण थएलो अर्थ विद्वानमंडळ तथा महात्मा जनोना चरणे हुं धरूं छुं अने तेना अवलोकनपूर्वक जो रागद्वेषनी असरनो अभावनी दृष्टिगोचर थएलो भासशे तो हुं कृतार्थ थयो एम समजीश.

वीसनगर.
श्रावण शुदि १ बुध.
संवत १९६७

स्वामी कृष्णाश्रम.

# ईशावास्योपनिषत्

## गुजराती टीका सहित.

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते ॥ पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण- मेवाऽवशिष्यते ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

मंत्र. ॥ १ ॥

ईशा वास्यमिदꣳ सर्वं यत्किंच ज- गत्यां जगत् ॥ तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥ १ ॥

## पदच्छेद:

ईशा-वास्यं-इदं-सर्वं-यत्किंच-जगत्यां-जगत् ॥ तेन-त्यक्तेन-भुंजीथा-मा-गृधः-कस्य स्वित्-धनं

## पदार्थः

परमेश्वरे-व्यापेलुं-आ-सघळुं-जे कांइ-पृथ्विने विषे-विद्यमान छे-तेना-त्यागवडे-तुं भोगव-नही-इच्छा राखतो-कोइना पण-धननी.

## मंत्रार्थ.

परमेश्वरे व्यापेलुं जे कांइ आ पृथ्विने विषे विद्यमान छे, तेनो त्याग करीने तुं (तेने) भोगव. अने कोइना पण धननी इच्छा करतो मां.

## टीका.

पण शब्दवडे बीजा कोइना धननी साथे पोताना धननो ए समास थाय छे. एटले जेम बीजा कोइना धननी इच्छानो निषेध कर्यो छे, तेम पोताना धननी पण इच्छा करवानो निषेध छे. तात्पर्य ए के जे धन प्राप्त थयुं छे, तेनी इच्छा तो घटे नहीं; परंतु ते धनना रक्षणार्थे एटली बधी काळजी अने प्रयत्न करवो पडे के तेथी आत्मचिंतनादिक अध्यात्मक अथवा सर्वात्मक साधनोमां न्युनता प्राप्त थाय, अने स्वार्थपरायणत्वनी वृद्धि थाय, तो ते धन पारकुं गणीने ते परथी पोतानी प्रीतिज उठावी लेवी जोइए.

उपर संसारनो त्याग करीने ते भोगववानुं सूचन कर्युं छे, ए उपरथी वादी पक्षने एवी शंका

उपजे के भोग्य वस्तुना सान्निध्य वगर तेनो भोग लेवो बने नहीं. सबब एकना एक संसारनो भोग अने त्याग ए बेऊ एकज वखते करवा बने नहीं. तेनुं समाधान ए छे के पहेलुं तो जे "त्याग" शब्द वर्तमान छे, ते संसारनो त्याग नथी, पण संसारनी इच्छानो त्याग फरमावेलो छे; अने बीजु संसारनी वस्तु भोगव्या पछी, तेनो उपराम थएथी तेनो त्याग करवानो भाव रहेलो छे. माटे ज्यां सुधी एवी उपरति थइ न होय त्यां सुधी मुमुक्षुए शुं करवुं ते बीजा मंत्रमां दर्शाव्युं छे.

## मंत्र. २

**कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳ समाः ॥ एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥ ॥ २ ॥**

पदच्छेदः

कुर्वन्-एव-इह-कर्माणि-जिजीविषेत्-शत-समाः एवं-त्वयि-न-अन्यथा-इति-अस्ति-न-कर्म-लिप्यते-नरे-

पदार्थः

करे जवां-ज-आ लोकमां-कर्मो-जो जीववानी इच्छा राखे-सो-वरस सुधी-ए प्रमाणे-तारे-नथी-बीजी रीते-ए प्रमाणे-छे-नहिं-कर्म-बाध करे छे-माणसने.

मंत्रार्थ.

जो तुं सो वरस सुधी जीववानी इच्छा राखे तो *कर्मो करे जवां जोइए. ए प्रमाणे तारे माटे

---

* अग्निहोत्रादिक शुभ कर्मो.

आ लोकमां तो छे बीजी रीते नथी. एम करवाथी माणसने कर्म बंधनकारक थतां नथी.

## टीका.

इंद्रिय भोगथी मनने लागतुं सुख, तथा ते भोगनी अप्राप्ति अथवा विसर्जनथी मनने लागेला दुःखनी निवृत्तिथी मानवामां आवतुं सुख, ए बंनेनी इच्छा जे पुरुषने ते जीवे त्यां सुधी उपराम पामे नहीं, तेवा पुरुषने माटे तो आ संसारमां शुभ कर्मो तेणे यावज्जीव करे जवां जोइए. अनिष्ट कर्मोना बंधननुं निवारण बीजी रीते थतुं नथी.

## मंत्र ॥ ३ ॥

**असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः । तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चाऽऽत्महनो जनाः ॥ ३ ॥**

## पदच्छेद.

असुर्या-नाम-ते-लोकाः-अंधेन-तमसा-आ-
वृताः तान्-ते-प्रेत्य-अभिगच्छन्ति-ये-के-च-
आत्महनाः जनाः

## पदार्थः

असुर-खीजनी अडक-ते लोको-अंधापाने लीधे-अज्ञानवडे-घेराइ रहेला-तेमने-तेओ-मरण पाम्या पछी-जइ मळे छे-जेओ-कोण-अने-आत्महत्यारा-माणसो.

## मंत्रार्थ.

ते लोको + अंधापाने लीधे अज्ञानवडे

---

+ आ ठेकाणे अंधापो जे आंखनो विषय छे ते उपरथी पांचे ज्ञानेन्द्रियोना विषयो समजी लेवा.

घेराएला होवाथी असुरनी खीजवाळुं, नाम मेळवे छे अने तेओ मरण पाम्या पछी तेवाओनेज जइ मळे छे. कोण? जेओ आत्महत्यारा माणसो छे ते.

## टीका.

आगला मंत्रमां दर्शाव्युं तेवा कर्मकान्डमां गरक रहेला कर्मजड लोको पोतानां चर्म चक्षुवडे सूक्ष्म वस्तुओ जाणवाने अशक्त होवाथी, छेकज अज्ञान अवस्थामां पडी रहे छे; प्रत्यक्ष प्रमाणवाद एज एकलो सिद्धान्तनुं साधन छे, एम गणीने अनुमानादिक साधनोना अंगिकार प्रत्ये तेओ शंकाशील रहे छे; अने परिणामे इंद्रियग्राह्य सुखोनी कामनाना वधाराथी आ लोकना चक्रवर्ति राजाना सुख भोगथी पण न धराता, स्वर्गादिक परलोकनुं तेवुं सुख प्राप्त करवाना प्रयत्नोमां जे-

मनी दृष्टि कर्मथी आगळ वधवा पामती नथी; एवी के जे जे इंद्रियग्राह्य सुखनो भोग लेवामां आवे छे, ते सघळा भोगोना वर्तमानकाळमां कोई कोई प्रकारनां दुःखनो भाव रहेलो होय छे; एटलुंज नहीं पण ते ते भोगनी प्राप्तिना साधनकाळमां, तेमज ते भोगना अंतकाळे तथा वियोगकाळे पण दुखनी उत्पात्ति अवश्ये थाय छे; तेनी प्रतिति तेमने क्षणे क्षणे थाय छे; ते छतां अध्यात्म शास्त्रनो अनादर करीने, ब्रह्मविद्याने हशी काढीने, अने आत्मपरिपूर्णतारुढ बनीने, कूवामांमा देडकानी पेठे विषयसुखनी लालसा तेओ उत्तरोत्तर वधारता जाय छे. अने स्वर्गनी प्राप्तिनी लालचथी मोहित थईने, त्यांनां सुखो तेमनी चर्मचक्षु दृष्टिए पडतां नथी, तो पण

कर्मकान्डनां पुस्तकोमां आपेलां रोचक वाक्यो उपर मात्र आधार राखीने, तथा तेमना अधुरा अर्थ उपरज आस्था राखीने पोताने कृतार्थ माने छे; परंतु तेज वाक्योनो संपूर्ण बोध प्राप्त करवानी आवश्यकता तेमना लेखवामां आवती नथी; **क्षीणे पुण्ये मर्त्य लोके विशन्ति** इत्यादि कवाक्योवडे स्वर्गादिक लोकनुं सुख पण तेज पुस्तकोमां उतरतुं दर्शाव्युं छे; ते वचनो प्रत्ये तेओ पोताना कान बंध राखे छे; अने आत्मज्ञानना सूक्ष्म तत्वो प्राप्त छतां, तेनो तिरस्कार करी आत्मानी ओळखाण अथवा यथार्थ समजना तेओ बेपरवा रहे छे; एवा लोकोज असुर कहेवाय छे. अने आत्मज्ञाननो तेओ निरोध करे छे; अथवा प्राप्त थतां तेने अटकावी राखे छे, तेथी तेओ

आतमहत्यारा गणाय छे. ए प्रकारना जनो ज्यारे मरणथी अथवा बीजी रीते, आ लोकथी अथवा आ संसारथी छूटा पडे त्यारे कांतो तेवाज लोकमां फरी जन्म पामे छे, अथवा आनी आ देहे, तेवाज लोकोना परिचयमां जई पडे छे.

## मंत्र ॥ ४ ॥

**अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवा आप्नुवन्पूर्वमर्षत् । तद्धावतोऽन्यान-त्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वादधाति ॥ ४ ॥**

पदच्छेदः

अनेजत्-एकं-मनसः जवीयः–न–एनत् देवाः-आप्नुवन्-पूर्वं-अर्षत्-तत्-धावतः-अ-

न्यान्-अत्य-इति-तिष्ठत् तस्मिन्-आपः-मातरिश्वा-दधाति

## पदार्थः

अकम्प-एकलो-मनथी-अधिक वेगवान-नथी-एने-देवो-पामे छे-पहेलांथी-गएलो-ते-दोडतो-बीजाने-ओळंगीने-एवी-रीते-खडो थाय छे-तेनाविषे-कर्मोने-वायु-धारण करे छे.

## मंत्रार्थ.

ते एकलो अकम्प छतां मन करतां अधिक वेगवान छे; तेथी पहेलां गयलो ( भासिने ) तेने देवो पोहोची शकता नथी. दोडतां दोडतां ते बीजाने ओळंगीने ए प्रमाणे उभो रहे छे. तेना विषे वायु कर्मोना विभाग करे छे.

## टीका.

ब्रह्मभावे सर्व एकज परमात्मा होवाथी ते मनवाणीथी अगोचर अज्ञेय छे, तथापि पंचिकरणादि विभाग द्रष्टिए जड अने चैतन्य तत्वोनो विचार करतां, चैतन्य तत्व हमेशां अव्यय रुपे एक अखंड रहे छे. अने जड तत्वना रंग, रुप, विभाग बंधाइने, अनेकधा तेनां दर्शन थाय छे ते दर्शनना द्रढ अभ्यासना योगे अहंभाव प्रगट थवाथी, परिणामे सगुण तथा निर्गुण एवी बे प्रकारनी आस्था तथा उपासना प्रवर्ते छे. ते माटे आगळ मंत्र ९-१०-११-१२-१३-१४ ए ६ मंत्रथी निरूपण करवामां आवशे.

## मंत्र ॥ ५ ॥

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके ।

तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ॥

### पदच्छेदः

तत्-एजति-तत्-न-एजति-तत्-दूरे-तत्-उ-अन्तिके-तत्-अन्तरस्य-सर्वस्य-तत्-उ-सर्वस्य-अस्य-बाह्यतः

### पदार्थः

ते-कम्पे छे-ते-नथी-कम्पतो-ते-वेगळेथी-ते-केवळ-पासेथी-ते-अन्तरमां-सर्वना-ते-वळी-सर्वनी-आनी-बहारथी.

### मंत्रार्थ.

ते सर्वना अन्तरमां छेकज पासे होवाथी ते अकम्प छे, अने ते आ सर्वनी बहार वेगळो होवाथी ते कम्पायमान छे.

## टीका.

आत्मतत्व सर्व व्यापक होवाथी तथा भूतमात्रना हृदयने विषे वर्तमान होवाथी, ते प्रत्येक जीवनी छेकज पासे छे; एटले जीवात्मानी साथे अभेद छे. अर्थात आत्मतत्वना विभुत्वने लीधे प्रत्येक स्थाने अने प्रत्येक बिंदुए वर्तमान छे; तथापि तेनी प्रतितीनुं स्थान अंतःकरणावच्छिन्न हृदय छे, माटे तेने हृदयने विषे कह्यो छे. तथा ते पोते अक्रीय छे, तेथी ते त्यां स्थाणुं रुपे स्थिर रहेलो छे; एम विद्वानो तो सारी पेठे समजे छे. पण पोतानाज हृदयनी निरीक्षा नहीं करतां बाह्य सृष्टि जे जड छतां आत्मतत्वना सान्निध्य योगे चेष्टा करी रही छे, तेनुंज मात्र जेओ अवलोकन करे छे, तेओने ते (आत्मा) घणो वेगळो एटले

तेमनी समज शक्तिनी बहार—समजशक्तिने अ-ग्राह्य लागे छे; तथा ते जड तत्वनी चेष्टा ते आत्मानी चेष्टा छे, एम तेओ मानी ले छे.

## मंत्र ॥ ६ ॥

**यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति। सर्व भूतेषुचाऽऽत्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥ ६ ॥**

### पदच्छेदः

यः—तु-सर्वाणि-भूतानि-आत्मनि-एव-अनुपश्यति। सर्व-भूतेषु-च-आत्मानं-ततः-न-विजुगुप्सते ॥

### पदार्थः

जे-पण-सर्व-भूतोने-आत्मतत्वने विषे-

ज-जूवे छे-सर्व-भूतोने विषे-अने-आत्माने-
तेथी-नथी निंदा करतो.

## मंत्रार्थ.

जे पुरूष सघळां भूतोने पण आत्माने विषे जूवे छे; अने सर्व भूतोने विषे आत्माने जूवे छे; तेथी ते ( कोईनी ) निंदा करतो नथी.

## टीका.

आ ठेकाणे जोवुं एटले अनुभवथी जाणवुं, एम थाय छे. तात्पर्य ए छे के सचराचर जगत आत्मामांथी उत्पन्न थयुं छे, तथा तेनी साथे अनुस्युत रहेलुं छे. अने ज्यारे ज्यारे जगतनी कोइ पण वात अथवा वस्तु लक्षपर आवे, त्यारे त्यारे तरतज ते वात अथवा वस्तु आत्मानाज सान्निध्यथी प्रतित थएली जड वस्तु होवाथी, ते आत्मानुंज द-

र्शन देछे; एम जे पुरुषना समजवामां आवे ते पुरुष ते वस्तुनी माफक पोतोने एक व्यक्ति स-मजीने एम पण समजे, के प्रत्येक व्यक्ति पोतानी प्रकृतिना स्वभावने अनुसरीने पोत पोतानो व्यापार अने क्रिया करे ज.य छे; अने अगर जो तेनो व्यापार तथा क्रिया विविध रुप धारण करे छे; तथापि व्यक्ति मात्रनी क्रिया, अने व्यापार समष्टि रूपे एकज आत्मतत्वना सान्निध्यथी उद्बोधित थएली छे, अने परमतत्वना एकज अवसाने– उन्नति मार्ग प्रत्ये ते व्यापार अने क्रियानो प्रवाह वलण पामेलो छे; तेमज हुं पण ते व्यक्तिओ पैकी एक व्यक्ति छुं; माटे जे अवसान प्रत्ये हुं मार्ग करूं छुं, तेज अवसाने पोहोचवाना मार्गो ते बधी व्यक्तिओ ग्रहण करे छे; माटे ते ते मार्गो

पण माराज मार्गो छे; अने एवी समजण थएथी कोईनी पण निंदा करवानुं—बीजानी समजमां दोषारोपण करीने, तेमने हलका पाडवाने तेनुं मन प्रवृत्त थशे नहीं. परंतु जे जे मार्गोना प्रवास वधारे कष्टजनक अथवा दीर्घकाळक्षेपनने पात्र लागे तेमनी अंदर रहेली दुर्घटता विचारपूर्वक कमी करवाने ते [illegible]वृत्त थशे.

## मंत्र ॥ ७ ॥

**यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानातः ॥ तत्र को मोहः कः शोक एक त्वमनुपश्यतः ॥ ७ ॥**

पदच्छेदः

यस्मिन्-सर्वाणि-भूतानि-आत्मा-एव-अ-

भूत्-विजानतः- । तत्र-कः-मोहः कः-शोकः-
एकत्वम्-अनुपश्यतः ॥

## पदार्थः

जेनाविषे-सर्व-भूतो-आत्मा-ज-थइ रह्यां छे-विद्वानने-त्यां-क्यां-मोह-क्यां-शोक-एक-पणुं-जोनारने.

## मंत्रार्थ.

विद्वान पुरुषने मन जे काळे भूत मात्र आत्माज थइ रहेलां होय छे, ते काळे एवा अद्वैत-भावि पुरूषना मनमां मोह क्यां रहे अथवा शोक क्यां वसे.

## टीका.

शोक मोहादिक वृत्तिओमां शोक मोहना विषय, तथा तेमना कर्ता भोक्ता, अथवा शोक

करनार अने मोह भोगवनार जूदा जूदा होय छे. ते बन्ने पक्षनो एकज आत्मामां समास थएलो जोनार विद्वान माणसने शोक के मोह उपजतो नथी. केमके ते समजे छे के इष्ट वस्तुनो वियोग, अथवा तेनी प्राप्तिनी न्युनता, ए शोकनुं कारण छे; अने वस्तुने यथार्थ जोवानी न्युनता ए मोहनुं कारण छे; ते प्राप्ताप्राप्त वस्तु, अथवा दृष्टिगोचर थएली वस्तु ए सर्व एकज ब्रह्म छे, एम तेने यथार्थ जणायाथी ते ते वस्तुओने लीधे तेने नथी थतो शोक के नथी थतो मोह.

## मंत्र ॥ ८ ॥

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविर-
ँ शुद्धमपापविद्धम् । कविर्मनीषी प-

रिभूः स्वयंभूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधा
च्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

सः-पर्यगात्-शुक्रम्-अकायम्-अव्रणम्-
अस्नाविरम्-शुद्धम्-अपापविद्धम्-कविः-मनी-
षी-परिभूः-स्वयंभूः-याथातथ्यतः-अर्थान्-
व्यदधात्-शाश्वतीभ्यः-समाभ्यः

पदार्थः

ते-चोमेरथी-प्रकाशस्वरुप-अशरीरी-नाश
रहित-नाडीरहित-निर्मळ-पुण्य पापरहित-सर्व
वस्तुने जोनार-सर्वज्ञ-सर्वेश्वर-स्वयंप्रकाश-
यथा घटितकर्मफळ आपतो हवो-नित्य-
घणा वरसोथी.

## मंत्रार्थः

ते सघळी मेरथी प्रकाश स्वरुप, अशरीरी, नाश रहित, नाडी रहित, पुण्य पाप रहित, सर्वज्ञ, सर्वेश्वर, स्वयं प्रकाश, एवो आत्मा हमेशां घणा काळथी कर्मनां यथाघटित फळ आपे जाय छे.

## टीका.

भाष्य वगरे पुस्तकोमां आ प्रकाश स्वरुपने विजळीनी उपमाथी ओळखवामां आवे छे. पण विजळी ए एक तत्व होवाथी जड, अने तेजनो बोध करे छे. परंतु रात्रिने विषे अजवाळानो अभाव छतां आत्मानो भाव तो होय छेज. अने ते काळनुं पण ज्ञान एज आत्मानो प्रकाश समजवानो छे तात्पर्य ए के सूर्य, विद्युत वगेरेमांथी जे प्रकाश नीकळे छे, ते एवो तो चळकाटवाळो होय छे

के तेथी ते ते प्रकाशस्थाननुं चोकस परिमाण चर्मचक्षुवडे धारी शकातुं नथी. तेवीज रीते आत्मतत्वना आवीर्भावथी ज्ञान मारफते पण तेनुं (आत्मानुं) माप के अटकळ थइ शकती नथी. माटे तेने विद्युतनी उपमा ते ते ग्रंथोमां आपवामां आवी छे.

अशरीरी, नाडी रहित, पुण्य पाप रहित, इत्यादिक विशेषणो वडे स्थूळ, सूक्ष्म, कारण शरीरो आत्माथी अळगां छे, एवो बोध आ मंत्रमां करवामां आव्यो छे.

आत्मा अक्रिय होवा छतां तेने फळ आपनार वर्णव्यो छे; ते एटला माटे के जेम वराळयंत्रमां राक्षसि काम करवानी शक्ति छे खरी, तथापि ते शक्तिने वराळनुं उद्‌बोधन मळ्या वगर ते यंत्र

कांइ पण काम करवाने असमर्थ छे; तेमज जड प्रकृति जे कांइ कर्म करे छे, तें चोकस नियमोने अवलंबीने चोकस फळ उपजावे छे. आथी एक महान नियम स्थापित थाय छे, ते ए के मनुष्य जे कर्म करे छे, तेनुं फळ प्रकृति तेज कर्मानुकूळ उपजाववाने समर्थ छे; बीजी कोइ रीते फळ उपजाववाने, तेनी जडताने लीधे ते अशक्त छे. अने एवी प्रकृतिनुं विशेषण जोडायाथी कर्मनुं फळ आत्मा आपे छे, एम गणवामां आव्युं छे.

## मंत्र ९

**अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते। ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायाँरताः ॥ ९ ॥**

## पदच्छेदः

अन्धं-तमः-प्रविशन्ति-ये-अविद्याम्-उपासते-ततः-भूय-इव-ते-तमः-यः-उ-विद्यायाम् रताः

## पदार्थः

अंधापो-अज्ञान-पेसेछे-जेओ- अविद्या-ने-उपासना करेछे-त्यांथी-फरीथी-ज-तेओ-अज्ञानमां-जेओ-तो-विद्याने-चहाय छे.

## मंत्रार्थ.

जेओ आविद्यानी उपासना करे छे, तेओ अंधत्वजन्य अज्ञानमां प्रवेश करेछे. अने जेओ विद्याने चहाय छे, तेओ अज्ञानथी पाछा फरे छे.

## टीका.

जेओ एकला कर्मकान्डपारायण रहे छे तेमना

समजवामां आत्मतत्वनुं यथार्थ ज्ञान आवतुं नथी, ते तेमनुं अज्ञान छे. अने तेज कर्मकान्डना मंत्रोमां अने क्रियामां आत्मतत्वनुं उल्लेखन समाएलुं होय छे, तेनो अर्थ जाणवानो प्रयत्न तेओ करता नथी, अने वस्तु रचनानी स्थूल उथलपाथलमां, तथा मंत्रोना उच्चारमां रोकाइ रहीने परिपूर्ण माने छे, तेथी तेमने अंध मानेला छे.

जे वात प्रस्तुत विषयनी साथे संबंध राखती न होय तेने अविद्या कहे छे. जेमके कोइ धनुर्विद्यानो विचार करतो होय, तेने कृषिशास्त्र अविद्या छे; तेमज जे सुथारनो धंधो करतो होय तेने वैदकनुं बहोळुं ज्ञान अविद्या छे. अने प्रसंगानुकूळ जाणवुं तेनुं नाम विद्या छे.

आ पुस्तक ब्रह्मविद्याना बोधनार्थे रचाएलुं

छे, माटे तेमां विद्या शब्दनो अर्थ ब्रह्मविद्या अ-थवा आत्मज्ञान; अने अनात्मवाद ए अविद्या स-मजवी.

मंत्रनुं तात्पर्य ए के जेओ मात्र यज्ञादिक क-र्मोना विधिविधानमां एटला बधा निमग्न रहे छे, के तेथी आत्मतत्व शुं छे, अने तेवां कर्मोनी आ-त्मतत्व प्रत्ये असर शी थाय छे, ते नथी तेओ समजता के नथी तेओ ते समजवानो यत्न करता. एवा लोको कर्म करवामां जे पापाचरण समायेलुं छे, तेनो निरोध करवाने असमर्थ रहे छे; तेथी कर्मकान्डनो लाभ मेळववाने बदले पापाचरणथी नीपजती हानीना तेओ भोग थइ पडे छे. पण जेओ आत्मतत्व शास्त्रनी ( ब्रह्मविद्यानी ) माहिती मेळवे छे, तेओ यज्ञादिक कर्मो कर्या पछी पाछा

पापाचरणनी निवृत्तिपूर्वक अध्यात्म विचारे आचरण करे छे; अने तेथी तेओ सुखी थाय छे.

## मंत्र ॥ १० ॥

**अन्यदेवाहुर्विद्ययाऽन्यदाहुरविद्यया ॥ इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विच चक्षिरे ॥ १० ॥**

### पदच्छेदः

अन्यत्-ए-व-आहुः-विद्यया-अन्यत्-आहुः -अविद्यया-इति-शुश्रुम-धीराणां-ये-नः-तत्-विचचक्षिरे-

### पदार्थ

जूदुं-ज कहेछे- विद्यानुं-जूदुं-कहेछे-अविद्यानुं- एमप्रमाणे-अमे-सांभळ्युं छे-डाह्या

**पुरुषोने-जेमणे- अमने- तेनुं-व्याख्यान करी संभळाव्युं.**

## मंत्रार्थ.

जेमणे अमने तेनं व्याख्यान करी संभळाव्युं ते डाह्या पुरुषोने एम कहेतां अमे सांभळ्युं छे के विद्यानुं फळ जूदुं छे, अने अविद्यानुं फळ जूदुं छे.

## टीका.

आ मंत्रनी अंदर शाब्दप्रमाण अथवा शास्त्र-प्रमाणनो बोध समाएलो छे.

ब्रह्मविद्याथी निपजतुं फळ अने कर्ममार्गथी निपजतुं फळ ए बे जूदां होय छे, एम जे शास्त्रमां अथवा उपदेशकोए जणाव्युं छे, तेमना नामना अभावे ते वचनो एटलां पुरातनी समजवानां छे,

के तेमनी उत्पात्ति समष्टि मात्रे मनुष्यना स्मरणनी बहार रहेली छे. अने एवुं धर्म पुस्तक मात्र वेद छे. अने वेदमां उल्लेख बताव्या प्रमाणे ब्रह्मविद्याथी उन्नति मार्गे चढतां पतननो भय रहेतो नथी; परंतु कर्म मार्गे प्रयाण करतां लोकान्तरनो प्रवास रहेलो छे, त्यांथी पतननो भय देखाइ आवे छे.

## मंत्र ॥ ११ ॥

**विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयँ सह । अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥ ११ ॥**

### पदच्छेदः

विद्यां-च-अविद्यां-च-यः-तत्-वेद-उभयं

सह-अविद्यया-मृत्युं-तीर्त्वा-विद्यया- अमृतं-
अश्नुते.

## पदार्थः

विद्याने-अने- अविद्याने- अने-जे-ते-
जाणे छे-बंनेने-साथे-अविद्याथी-मोतने-त-
रीने-विद्यावडे-अमरपद-भागवे छे.

## मंत्रार्थ.

विद्याने तथा अविद्याने एकठउने जे पुरुष सा
थे साथे जाणे छे, ते अविद्यावडे नीपजता मोतने
तरी जइने विद्यावडे अमरपद भोगवे छे.

## टीका.

आ मंत्रथी एवुं सूचन थाय छे के जेओ ए-
कली ब्रह्मविद्यानो अभ्यास करीने सांसारिक विष-
योना ज्ञान वगर आगळ वधवा धारे छे, तेओ

पोताना प्रयत्नोमां पार पडता नथी. परंतु सांसारिक तथा पारमार्थिक ए बेउ ज्ञान संपादन करीने पछी संसारमां जे जे विघ्नो आवे तेनी निवृत्ति करीनेज पारमार्थिक हेतु पार पाडवानो श्रम सफळ थाय छे.

आगळना त्रण मंत्रोवडे ब्रह्मभावे आत्मा अनात्मानो विचार निरुपण कर्यो, ते अद्वैत अने द्वैत रुपे करवामां आव्यो हतो. एमां जड अने चैतन्य ए बेउ तत्वो के जेनी निर्निराळी उपासना करवाथी तेनां निर्निराळां फळ नीपजे छे, तेनुं व्याख्यान तेमां करवामां आव्युं हतुं. हवे तेज तत्वो व्यक्तिमापन्न थता पहेलां, अने व्यक्तिभावना आरंभमां निर्निराळी उपासनाथी जे परिणाम प्राप्त थाय छे, तेनो विचार चाले छे.

मंत्र ॥ १२ ॥

अन्धंतमः प्रविशन्ति येऽसंभूतिमुपासते । ततोभूयइव ते तमो यउ संभूत्याꣳरताः ॥ १२ ॥

पदच्छेदः

अन्धं-तमः-प्रविशन्ति-ये-असंभूतिम्-उपासते । ततःभूय-इवते-तमः-यः-उ-संभूत्याम्-रताः ॥

पदार्थः

अंधापो-अज्ञानमां-पेसेछे-जेओ-अव्यऽकृतप्रकृतिने-उपासे छे-त्यांथी-पाछा फरीने-ज-तेओ-अज्ञान-जेओ-तो हिरण्यगर्भनी अंदर-आनंद माने छे.

## मंत्रार्थ.

जेओ अव्याकृत प्रकृतिनी उपासना करे छे तेओ अंधत्वजन्य अज्ञानमां प्रवेश करे छे. अने जेओ हिरण्यगर्भादिक समष्टिरुपधर आत्मामां आनंद माने छे, तेओ त्यांथी फरीने अज्ञानमां जइ पडे छे.

## टीका.

अखंड एकरस ब्रह्म वस्तुतः अविभाज्य छे, तेनुं मनुष्यनी समजणमां ग्रहण करवा माटे कल्पनाद्वारा जे महाभूतादिक अवयवो अने अंगोनी उत्पत्ति गणवामां आवी छे, ते उत्पत्तिना प्रारंभकाळमां ज्यारे जड तत्व स्पष्टरीते समजवामां आव्युं नहोतुं, त्यारे ते अस्पष्ट जड तत्व एटले अव्याकृत प्रकृतिनी उपासना स्थापित थइ. ते उपासना जेओ करे छे तेमने यथार्थ वस्तुनुं स्पष्ट ज्ञान

न होवाथी तेओ अंधत्वजन्य अज्ञानमां, एवी उपासनाद्वारा प्रवेश करे छे; अने त्यांथी ए प्रकृतिनी चेष्टाने उद्बोधन करनार आत्माने, समष्टि कारणरुप हिरण्यगर्भादिक देवता मानीने तेनी उपासनाथी अणिमादिक सिद्धिओ तेमने प्राप्त थाय छे; अने तेथी देवताइ पदनी प्राप्ति थाय छे, ए खरुं; तथापि तेथी कांइ अखंड सुखनी प्राप्ति थती नथी; पण पतननो भय तो रहेज छे. अर्थात, धर्मतत्वनुं किंचित ज्ञान मेळव्या पछी पण तेओ अज्ञानमां फसाय छे.

## मंत्र ॥ १२ ॥

**अन्यदेवाऽऽहुः संभवादन्यदाहुर संभवात् । इति शुश्रुमधीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥ १२ ॥**

## पदच्छेदः

अन्यत्-एव-आहुः-संभवात्-अन्यत्-आहुः असंभवात्-इति-शुश्रुम-धीराणाम्-ये-नः-तत् विचचक्षिरे.

## पदार्थः

जूदुं-ज-कहे छे-कार्यब्रह्मथी-जूदुं-कहे-छे-अव्याकृत मूळ प्रकृतिथी-ए प्रमाणे-अमे सांभळ्युं छे-डाह्या पुरुषोने-जेमणे-अमने-ते-व्याख्यान करी संभळाव्युं.

## मंत्रार्थ.

जे डाह्या पुरूषोए अमने तेनुं व्याख्यान करी संभळाव्यु, तेमने एम कहेतां अमे सांभळ्युं छे, के कार्य ब्रह्मनी उपासनानुं फळ जुदुं कहेवाय

छे, अने अव्याकृत प्रकृतिनी उपासनानुं फळ जूदुं कहेवाय छे.

## टीका.

पाछळ १० मा मंत्रनी टीकामां बताव्या प्रमाणे वेदमां कहेली वातोने अंगिकार करतां जड तत्वनी अव्याकृत अवस्थामां पण मात्र तेज तत्वनी उपासनाथी अंधत्वजन्य अज्ञानमां फरीथी फसी पडाय छे; एटलुंज नहीं पण सांसारिक अने इंद्रिय भोगविलासमां उत्तरोत्तर वृद्धिनी लालसा राखीने एवो मत बांधवामां आवे, के जड पदार्थमां आत्मानो भाव अने सान्निध्य होवाथी, तेनो जड तत्वनी उपासनाथी पण आत्मानीज उपासना थाय छे, तेथी ते मार्गे हुं यथार्थ उपासना करूं छुं; तो तेवी उपासनाथी कदि अणिमादिक सिद्धिओ परि-

अंत भोगविलासना सुखनी प्राप्ति थाय, तोपण आखरे तो दुःखमां पाछा आवी पडवु पडे. माटे शुद्ध ब्रह्मनी उपासनाज अखंड सुख आपनार छे.

## मंत्र ॥ १४ ॥

**सभूतिं च विनाशंच यस्तद्वेदोभयꣳ सह । विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा संभूत्या ऽमृतमश्नुते ॥ १४ ॥**

### पदच्छेद.

संभूतिं-च-विनाशं-च-यः-तत्-वेद-उभयं सह-विनाशेन-मृत्युं-तीर्त्वा-असंभूत्या-अमृतं-अश्नुते. ॥

### पदार्थ.

कारण ब्रह्मने-तथा-संसारने-अने-जे-ते

**જાણે છે-બેઉને-સાથે-સંસારવડે-મોતને-ઓ-ળંગીને-અવ્યાકૃતવડે-અમરપદ-ભોગવે છે.**

## મંત્રાર્થ.

કારણબ્રહ્મ, તથા સંસાર એ બેઉને સાથે રહેલાં જે જાણે છે, તે સંસારવડે મોતને ઓળંગીને અવ્યાકૃતવડે દેવલોક—અમરોનો દેશ ભોગવે છે.

## ટીકા

સંસારને હિરણ્યગર્ભાદિકના ભોગો માંનવામાં આવ્યો, એટલે હિરણ્યગર્ભમાં લય થયો. તેમજ અવ્યાકૃતમાં પ્રકૃતિનો લય થાય છે. એટલે ભક્તિ-માર્ગે અથવા કર્મમાર્ગે ઉત્તરોત્તર લોકાન્તરે જવાય છે; અને છવટે જ્ઞાન પામેથીજ મોક્ષપદ પ્રાપ્ત થાય છે. કેમકે કારણથી કાર્ય જૂદું પડતું નથી. માટે સંસારરૂપી કાર્ય, હિરણ્યગર્ભ—અથવા કારણ

ब्रह्मथी जूदुं पडतुं नथी; एम ज्यारे समजवामां आवे, त्यारे संसारमां रहेतां छतां पापाचरण देखीने तेनो निरास करवानी बुद्धि सूझे; तेना परिणामे उत्तम गतिए चढाय, एटले मृत्युने तरवुं बनी आवे. अने पछी प्रकृति एटले अव्याकृतनी उपासना करवामां आवे, तेथी देवलोकनी प्राप्ति थाय खरी. तोपण मोक्षनी प्राप्ति तो पहेला मंत्रमां कह्या प्रमाणे त्याग वगर थती नथी.

## मंत्र ॥ १५ ॥

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्। तत्त्वं पूषन्न पावृणु सत्य धर्माय दृष्टये ॥

## पदच्छेदः

हिरण्मयेन-पात्रेण-सत्यस्य-अपिहितं-मुखम् । तत्-त्वं-पूषन्-अपावृणु-सत्यधर्माय दृष्टये ॥

## पदार्थः

ज्योतिस्वरुप-पात्रवडे-सत्यनुं-ढंकाएलुं-मुख ( मार्ग )-ते-तुं-सूर्यनारायण-उघाड साचा धर्मनी दृष्टि माटे.

## मंत्रार्थ.

हे सूर्यनारायण, सत्यनो मार्ग पण ज्योतिस्वरुप पात्रथी ( सूर्यबिंबथी ) ढंकाएलो छे, ते साचा धर्मनी दृष्टिए पडवा माटे तुं उघाड.

## टीका.

आ मंत्रमां सूर्य बिंबमां रहेला देवनुं संबोधन छे, ते उपरथी परमात्माने ज्योतिस्वरुप गणवामां आव्यो छे. धर्म उपरथी धर्म पाळनार, तथा सत्य उपरथी ब्रह्मविद्यानुं बोधन करवामां आव्युं छे.

पूर्व मंत्रोमां तथा अध्यात्म शास्त्रना ग्रन्थोमां हिरण्यगर्भ, कारण ब्रह्म, साक्षिचेतन, आत्मा, तैजस, ब्रह्म, प्राज्ञ, सूत्रात्मा, शबळ ब्रह्म, इत्यादिक शब्दो वापरवामां आवे छे; ते बधा जूदी जूदी उपाधिमां, अने ते ते उपाधिना योगे प्रतित थता एकज अखंड चैतन्य तत्वनो बोध करे छे. तेम उपाधि पण माया, प्रकृति, अविद्या, इत्यादिक नामो वडे एकज जड तत्वनी प्रतिति छतां, ते परमात्माना एक देशमां स्थित मानवामां आवे

छे. अर्थात जड अने चैतन्यनां विशेषणोनुं उपलक्ष करतां, एक अखंड एकरस परमात्मानेज जे ते उपासना प्रेरवामां आवे छे. आ नियमने अनुसरीने आ मंत्रमां सूर्यनी प्रार्थना करवामां आवी छे; तेनी अंदर जे जे विशेषणोए सूर्यनी प्रतिति थाय छे, ते बधां परमात्माथीज प्राप्त थतां मानवामां आव्यां छे. तेनुं तात्पर्य ए छे के उक्त विशेषणोमां बोधित थता गुणो तथा यत्किंचित ज्ञान पण ( जूदी जूदी उपासनाथी ) प्राप्त थाय खरुं. छतां तेनुं संपूर्ण अने यथार्थ ज्ञान जे रस्ते प्राप्त थइ शके ते रस्तो पण ए प्रतितिमां आवेलुं सूर्य बिंबज देखाडी आपे, अथवा ते बिंबमां स्थित परमात्माज तेनी प्रेरणा करे, एवी प्रार्थना करवामां आवी छे.

मंत्र ॥ १६ ॥

पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन्समूह । तेजो यत्ते रूपं कल्याण तमं तत्ते पश्यामि योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि ।

पदच्छेदः

पूषन्-एकर्षे-यम-सूर्य-प्रजापत्य-व्यूह-रश्मीन्समूह-तेजः यत्-ते-रूपं-कल्याणतमं-तत्-ते-पश्यामि-यः-असौ-असौ पुरुषः-सः-अहं-अस्मि.

पदार्थः

पोषणकरनार-(एक चक्रना रथवाळो) एक सरखी गतीमान-नियममां राखनार-

अंगिकार करनार-ब्रह्मपुत्र-वेगळा करवा-
र्क. .गो : समूह–तेज-जे-तारुं–रूप-अति
कल्याणकारी–ते-त.ंज.उछुं-जे-आ-आ–
पु-ते हुं-छुं.

## मंत्रार्थ.

हे प्राणीमात्रनुं पोषण करनार, एक सरखी गतिमान, नियामक, (प्राणी) अंगिकार करनार, ब्रह्माना पुत्र, कीरणोना समूदायने दूर कर. तारुं अति कल्याणकारी जे तेज छे, ते तारुं तेज हुं जोउछुं; (तो जणाय छे के) जे आ पुरुष छे, तेज आ पुरुष हुं छुं.

## टीका.

आ मंत्रनुं तात्पर्य पण पाछळ मंत्र १९ नी टीकाम आपेला अर्थे समजवानुं छे.

विशेषमां ए के जे परमात्मा सूर्य मंडळमां स्थित होवाथी ते मंडळने पोताना धर्म प्रत्ये प्रेरणा प्राप्त थाय छे, तेज परमात्मा आ प्रार्थना करनारना हृदयने विषे पण विराजमान रहीने तेने प्रेरणा करे छे, एम बोधन करवामां आव्युं छे.

मं[redacted] ॥ १७ ॥

**वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तꣳ शरीरम् । ॐक्रतो स्मर कृतꣳस्मर क्रतो स्मरकृतꣳस्मर ॥ १७ ॥**

पदच्छेदः

वायुः-अनिलं-अमृतं-अथ-इदं-भस्मान्तं-शरीरम्-ॐक्रतो-स्मर-कृतं-स्मर-क्रतो-स्मर-कृतं-स्मर.

पदार्थः

प्राणवायु-समष्टिवायु-देवलोकने-हवे-आने-भस्मिभूत-शरीरने-(परमात्मा) हे-यज्ञनारायण-संभारो-करेलां कर्म-संभारो-संकल्पात्मकदेव-संभारो-करेलांकर्म-संभारो.

मंत्रार्थः

हवे आ शरीर भस्मिभूत थवाथी प्राणवायु समष्टिवायुमां (मळी गयो त्यारे सूत्रात्मा) देव लोकमां (जाय एटला माटे) हे यज्ञनारायण संकल्पात्मक देव तमे करेलां कर्मो संभारो, सर्वथा संभारो.

टीका.

केटलाक टीकाकारो मरणकाळे संभारवानां कर्मोमां मात्र विहित कर्मो संभारवानी सूचना आ

मंत्रमां रहेली समजावे छे. परंतु अविहित कर्मो प्रत्ये सर्वज्ञ परमात्मा अखाडा करे के केम ? एवी शंकाना समाधानमां विचारवानुं ए छे के पाछला मंत्रोमांना निरुपणानुंसार मुमुक्षु अवस्थामां कर्म मार्ग मुजब थएला ,धार्मिक संस्कारो, तथा उपासनानी अंदर रुद्राभिषेकादि पाठ–पूजामां थएला, तथा ब्रह्मात्मक संस्कारो, मुमुक्षु अवस्थामां अन्य साधनोना संस्कारो, ए बधा इष्ट संस्कारोवडे प्राप्त थएला अने दृढिभूत थएला ज्ञानना योगे कोइ पण सांसारिक के इंद्रियग्राह्य सुखनी अपेक्षा मुमुक्षुने रहे नहीं, एवा पुरुषनां कर्म अंत वखते तेनी पासे सीलक रहेतां नथी. माटे कर्मनुं फळ आपनार संकल्पात्मक यज्ञनारायण पोतानाज धर्मानुसार कोइ पण कर्मनी निरिक्षा करशे, तो

तेमने एवुं कोइ कर्म मळवानुं नथी के तेनुं फळ अनिष्ट होय; एवी खातरी पामेला पुरुषनी प्रार्थना आ मंत्रमां समाएली मानवी सयुक्तिक छे.

## मंत्र ॥ १८ ॥

**अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिंविधेम ॥ १८ ॥**

### पदच्छेदः

अग्ने-नय सुपथा-राये अस्मान्-विश्वा-नि-देव-वयुनानि-विद्वान्-॥ युयोधि-अस्मत्-जुहुराणां-एनः भूयिष्ठां-ते-नम उक्तिं-विधेम॥

पदार्थः

हे अग्नि-दे रीजा-सारे मार्गे-क फळभो-गार्थे-अमने-सर्व-हे देव-कर्मो-जाणनार-निवारण कर-अमारां-यज्ञ क रनारा-पापो-अति घणी-तने-नम्रवाणी-अमे धारण करी-ए छीए.

[redacted]त्रार्थः

हे अग्निदेव, कर्मफळना भोगार्थे अमने सारे रस्ते दोरी जा. सर्व कर्मना ज्ञाता हे देव अमारां पापोनुं तुं निवारण कर. तारो यज्ञ करनारा अने तने वारंवार अति नम्रता पूर्वक नमस्कारनी वाणी उच्चारीए छीए.

टीका.

आ मंत्रमां कर्म फळना भोगनी याचना करी

छे. ते भोग स्थूळ शरीरना अभावे नथी प्राप्त थाता के नथी तेनो भोग लेवातो. अने स्थुळ शरीरनी प्राप्ति, एटले पुनर्जन्म, ए आ पुस्तक समज्या पछी, याचनाने पात्र, कोइ पुरुष गणे, ए संभवे नहि. माटे १७मा मंत्रनी टीकामां उल्लेखन कर्या मुजब पोतानां कर्मो ज्ञानाग्निथी दग्ध थएलां याचक पुरुष जाणे छे, छतां कर्म मार्ग निष्ठाथीज मात्र दोराइने ते आ याचना करे छे एम मानवुं सयुक्तिक छे.

## ॥ इति ॥

**ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते ॥**
**पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवाऽवशिष्यते ॥**

**॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥**